!! तन्हाई !!

इस जग में अकेले आयी थी मै,

इस जग से अकेले चली जाउंगी मै,

इस जग में क्या लेकर आयी थी मै ,

इस जग से क्या लेकर जाउंगी मै ,

इस जग में मिले कई रिश्ते नाते ,

उन नातो को छोड़ चली जाउंगी मै,

बिटिया का रूप ले इस जग में आयी,

एक साथ दो कुलो कि लाज बचाऊंगी मै,

सपने हकीकत में बदलते यहाँ ,

ऐसा सुना था मैंने किसीसे ,

पानी में भी पिघलते है पत्थर,

ऐसा कहीं पढ़ा था मैंने ,

सपने हकीकत में बदलते देखे नहीं,

पानी में पत्थर पिघलते देखे नहीं ,

किस्मत पर जोर किसी का चलता नहीं,

अपनी किस्मत से ज्यादा कोई पता नहीं,

सासो कि जोर बड़ी नाजुक होती है ,

कब टूट जाये किसी को पता नहीं ,

मैंने भी सपने सुहाने सजाये ,

पर टूटकर बिखरकर पड़े है कहीं,

उन सपनो को पल पल पिरोती हु मै,

एक सुंदर सी माला बुनती हु मै,

सपने सजाये थे मैंने बाबुल के संग,

जो पूरे हो न सके,

बाबुल तो अब मेरे संग में नहीं,

बस उनके सपनो का जहा मेरे संग में,

सपने सारे हकीकत में बदलू,

बाबुल कि हर आश पूरी मै कर दू,

इस जग कि तो है रीत पुरानी ,

कोई मिले तो कोई बिछड़े संगी साथी,

अंततः यही कहना चाहूंगी मै ,

इस जग से एक दिन चली जाउंगी मै,

अपने कर्मो को संग लेकर आयी थी मै,

अपने कर्मो को संग लेकर चली जाउंगी मै !!